श्रीमद् भागवत रसिक कुटुंब

॥ श्री गीत गोविंद॥

मैया जब मैं घर से चलूँ बुलावे ग्वालिन घर में मोय॥
अचक हाथ कौ झालौ देकै,
मीठी बोलें देवर कह कैं।
निधरक हो जाय साँकर दैके॥

दोहा- झपट उतारें काछनी, मुरली लेय छिनाय।
मैं बालक ये धींगरी, इनते कहा बसाय॥
आपहु नाचैं मोय नचावें, कहा बताऊँ तोय॥

मैं भोरौ ये चतुर गुजरिया,
एक दिन ले गई पकरि उँगरिया,
छोटी-सी याकी राम कुठरिया।

दोहा- धरी मटुकिया मो निकट, माखन की तत्काल।
माखन दूँगी घणो सो, चींटी बीनौ लाल॥
मैंने याकी चींटी बीनी, ये निधरक गई सोय॥

एक दिना पनघट पर मैया,
मैं बैठौ एक द्रुम की छैंया,
ढिग बैठ्यो बलदाऊ भैया।

दोहा- ये पहुँची ले गगरिया, रिपट्यो याकौ पाम।
मेरे गोहन परी गई, धक्का दीनों श्याम॥
गुलचा दे दे गाल लाल किये, मैं ठाड्यो रह्यौ रोय॥

तेरे मुंह पै करें बढ़ाई,
बाहर निकसत करैं बुराई,
ऐसी ब्रज की ढीठ लुगाई।

दोहा- इनकौ पतियारौ करे, मैं झूठौ ये शाह।
चोर नाम मेरौ धर्यो, होन न देंगी ब्याह॥
मोते इनने ऐसी कीनी, जैसी करै न कोय॥

॥ गीतम् 5 ॥

(अथ पञ्चमप्रबन्धो गुर्जरीरागेण रूपकताले गीयते)

सं(ञ्)चरदधरसुधामधुरध्वनिमुखरितमोहनवं(म्)शम् ।
चलितदृगञ्चलचञ्चलमौलिकपोलविलोलवतंसम् ।
रासे हरिमिह विहितविलासं(म्)
स्मरति मनो मम कृतपरिहासम् ॥ ध्रुवम्॥1॥

चन्द्रकचारुमयूरशिखण्डकमण्डलवलयितकेशम् ।
प्रचुरपुरन्दरधनुरनुरञ्जितमेदुरमुदिरसुवेशम् ॥ 2॥ रासे हरिमिह

गोपकदम्बनितम्बवतीमुखचुम्बनलम्भितलोभम् ।
बन्धुजीवमधुराधरपल्लवमुल्लसितस्मितशोभम् ॥ 3॥ रासे हरिमिह

विपुलपुलकभुजपल्लववलयितवल्लवयुवतिसहस्रम् ।
करचरणोरसि मणिगणभूषणकिरणविभिन्नतमिस्रम् ॥ 4॥ रासे हरिमिह

जलदपटलचलदिन्दुविनिदकचन्दनतिलकललाटम् ।
पीनपयोधरपरिसरमर्दननिर्दयहृदयकपाटम् ॥ 5॥ रासे हरिमिह

मणिमयमकरमनोहरकुण्डलमण्डितगण्डमुदारम् ।
पीतवसनमनुगतमुनिमनुजसुरासुरवरपरिवारम् ॥ 6॥ रासे हरिमिह

विशदकदम्बतले मिलितं(ङ्) कलिकलुषभयं(म्) शमयन्तम् ।
मामपि किमपि तरङ्गदनङ्गदृशा मनसा रमयन्तम् ॥ 7॥ रासे हरिमिह

श्रीजयदेवभणितमतिसुन्दरमोहनमधुरिपुरूपम् ।
हरिचरणस्मरणं(म्) प्रति सम्प्रति पुण्यवतामनुरूपम् ॥ 8॥ रासे हरिमिह